Vol 45ssue 4 Oct 2015 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 4 | Oct - 2015

जनसंचार माध्यम और हिन्दी : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

First Author Details :

प्रवीण देशमुख
हिन्दी विभागप्रमुख ,गुलाम नबी आजाद कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,बार्शिटाकली, जिला–अकोला(महा.)

सारांश

वर्तमान समय में जनसंचार के माध्यमों में भी काफी वृध्दि हुई है। आज नई–नई आधुनिक तंत्रविज्ञान तथा नए–नए जनसंचार माध्यम जैसे–इटंरनेट,ई–मेल, मोबाईल द्वारा यह क्षेत्र और अधिक उपयोगी सिदध हो रहा है। इंटरनेट के माध्यम से कम–से–कम समय में समाचार विश्व स्तरिय रूप धारण कर लेते है। आज के इस वर्तमान युग में केवल पत्र–पत्रिकाए ही नहीं तो बल्कि वेब मीडिया द्वारा हिन्दी का प्रसार–प्रचार जोरों–शोरों से होता हुआ दिखाई दे रहा है। समय की भी उपयोगीता सिदध हो रही है। प्रिन्ट तथा इलेक्ट्रानिक इन दोनों माध्यमों ने हिन्दी को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई है। मीडिया और हिन्दी दोनों का समान रूप दृष्टिगोचर होता है। अर्थात आज के इस आधुनिक युग में जहॉ भौतिकवाद, बाजारवाद, भूमण्डलीकरण तथा वैश्विकरण का दौर चल रहा है,ऐसे युग में मीडिया की जिम्मेदारी भाषा के हित में तथा उसके विकास में अधिक स्वरुप में निश्चित ही बढ़ जाती है। मीडिया में गागर में सागर भरने की क्षमता, तीव्र भाषा प्रवाह, प्रभावोत्पादकता, श्रृगांरिकता आदि विशेषताएँ प्रमुखता से दिखाई देती है। जनसंचार के सभी माध्यम हिन्दी के विकास में वृध्दि तथा विश्व स्तर पर हिन्दी को विस्तृत स्वरूप प्रदान कर रहे है।

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे संप्रेषण–व्यवस्था की आवश्यकता महसूस हुई,जो न केवल उसकी जानकारी प्राप्त करने का माध्यम बने बल्कि व्यक्ति–व्यक्ति के बीच विचारों और भावनाओं का आदान–प्रदान हो सके। अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाने की अदम्य लालसा सभी में होती है। अभिव्यक्ति के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया जाना स्वाभाविक होता है। आज का दौर माध्यमों के विस्फोटों का दौर तथा ज्ञान के विस्फोटों का दौर कहॉ जाय तो इसमें कोइ अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज की पत्रकारिता इस संदर्भ में सटीक उदाहरण है। जो सर्वसंचारी है। पहले की तुलना में आज मीडिया का प्रभाव अभूतपूर्व और शक्तिशाली हो रहा है।मीडिया आज इतना अधिक प्रभावशाली बना है कि आज किसी भी घटना का छुपना असंभव सा हो गया है। इसमें कभी–कभी बात का बतंगढ़ भी बन जाता है।

जनसंचार माध्यम

वास्तव तथा सत्य को उजागर करना पत्रकारिता का मूल धर्म है। जनतंत्र में ही स्वतंत्र पत्रकारिता का विकास तय होता है, वह पनपती है। आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। आज का युग ऐसा युग है जहॉ आये दिन नए–नए अविष्कार, नयी–नयी खोज होती है। इसलिए जनसंचार के नए–नए माध्यमों का अविष्कार बड़ी तेजी से होता हुआ दिखायी देता है। आज ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई है कि जहॉ इलेक्ट्रानिक माध्यमों के बिना हमारी शाम गुजरती नहीं और ना ही दिन निकलता है। वह माध्यम फिर इलेक्ट्रानिक हो या फिर चाहे मुद्रित हो।

समूचा विश्व सूचना के तीसरे लहर से दौड़ रहा है। सूचना क्रांति कृषी तथा औद्योगिक क्रांति से बढ़कर एक नया आयाम लेकर पनप रही है। संप्रेषण एवं संचार के इस क्षेत्र में समाचर पत्र, इलेक्ट्रानिक माध्यमों में अपने अस्तित्व के लिए घमासान युध्द चल रहा है।

आज हमें यह प्रखरता से दिखाई देता है कि अनुसन्धान के क्षेत्र में, अनुसन्धान की प्रक्रिया बढ़ रही है तथा समाचार पत्र अपने पाठकों को संघटित रखने के लिए मार्केटिंग के लिए नए प्रयोग कर रहे है। एक जगह ॲल्विन टॉमलर ने कहा है–''कि आज हम सूचना के तीसरी लहर से गुजर रहे हैं। सूचना क्रांति यह कृषी एवंम् उद्योग क्रांति से भी बढ़कर काफी महत्वपूर्ण रही है। क्यों कि सूचना क्रांति ने समूचे मानव विश्व का आयाम बदल दिया है।'' [1]

ज्ञान के क्षेत्र में मनुष्यता की हाल–फिलहाल की सबसे बड़ी उपलब्धि कही जी सकती है। इन्टरनेट की बहुआयामी उपयोगिता से

विकास के, प्रगति के नए–नए किर्तिमान स्थापित किए गए है। वैसे देखा जाए तो समाचार और विचारों को जानने के कई तरिके रहे है, परन्तु अब वेब पत्रकारिता इलेक्ट्रानिक माध्यम का एक अंग बनकर अपनी जड़ों को मजबूती से जमायी है। '' 1992 में वर्ल्ड वाईड वेब जारी होने के बाद 1995 तक विश्व में यूजनेट पर करीब ढाई हजार समाचार ग्रुप कुकुरमुत्तेई की तरह छा गए। 90 के दशक में टाइम्स ऑफ इंडिया, हिन्दुस्तान टाइम्स ने भी इन्टरनेट संस्करण शुरु किए। इस बीच हिन्दी दैनिकों ने भी वेब पत्रकारिता में हाथ अजमाइश की।'' [2]

मीडिया सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि गतिविधियों को गतिशील बनाने में अथवा सामाजिक परिवर्तन लाने में प्राचीन काल से क्रियाशील रहा है। फिर वह टेलीविजन, दूरसंचार, संगनक और इंटरनेट हो। आज के इस भूमंडलीकरण के युग में दूरदर्शन का विकृत रुप भी हमारे सामने आ रहा है। एक तरह से दूरदर्शन हमारी संस्कृति पर सीधे–सीधे हमला करते हुए दिखायी दे रहा है। इससे भी कही न कही संस्कृति पर आघात होते हुए दिखायी देते है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ–साथ नए–नए संचार माध्यमों का अविष्कार होता गया। जिसमें विशेषतः इलेक्ट्रानिक माध्यमों ने इस क्षेत्र में एक नया आयाम स्थापित किया। जिसमें यह क्षेत्र पूरी तरह से प्रभावित रहा है।

आज हम ई–मेल द्वारा भी अपने कार्य को बखूबी पूरा करते दिखायी देते है। ई–मेल द्वारा पत्र व्यवहार भी किया जा रहा है। '' ई व्यवस्था के विश्वव्यापी जाल के साकार होने से गॉव रूपी विश्व अर्थात ग्लोबल विलेज की संकल्पना यथार्थ बनी रही है। 1983 में पोल ओके पैट्रिक्स ने इंटरनेट को आज जनता के लिए खोल दिया। 1972 में रेटो मलिनसन ने ई–मेल भेजने या पढ़ने का पहला कार्यक्रम तैयार किया।'' [3]

हिन्दी के प्रचार–प्रसार में इंटरनेट का योगदान

ई–कॉमर्स ऐसी प्रक्रिया रही है जो किसी भी प्रकार के व्यवसाय को संचालित करने के लिए इंटरनेट पर की जानेवाली कार्यवाही को इलेक्ट्रॉनिक्स कॉमर्स कहते है। आगे चलकर मोबाईल कॉमर्स भी नया मोड़ इसमें जुड़ गया। विश्व भर के दुर्लभ पुस्तके जो मिलना कठिन ही नहीं बल्कि दुर्लभ हो रहा था, वहॉ स्कॅनिंग कर पुस्तकों को इंटरनेट पर उपलब्ध किया गया। किताबों को आनलाईन डाउनलोड कर सकते है, डाउनलोड न होनेवाली किताबों को उसका मूल्य देखकर मॅगवा सकते है। ई–पुस्तकालय के माध्यम से व्यक्ति विश्वभर के पुस्तकों से जूड़ गया। इसके माध्यम से हिन्दी की पुस्तके पाठकों तक पहुचाना अधिक सुलभ हो गया। आज जो हिन्दी को विश्वरुपी स्वरुप प्राप्त हो रहा है,उसमें इंटरनेट का विशेष योगदान रहा है। जो पुल बनने का काम कर रहा है। इसमें सूचना और संचार तकनीक के माध्यम से किसानों को कृषी संबंधीत सभी जानकारियॉ उपलब्ध हो जाती है।

मनुष्य जीवन के विकास के साथ–साथ संचार माध्यमों ने अपने विकास की निरंतरता को जारी रखा। आज मीडिया बाजार की आवश्यकता है और हिन्दी मीडिया की। वेबसाइटों का हिंदीकरण होते जाना इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर हिंदी के नये जलवे को दर्शाता है।

संगणक,इंटरनेट, ई–मेल, वाइस–मेल, दूरध्वनि, भ्रमणध्वनि और ई–कॉमर्स आदि ऐसे महत्वपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम रहे है जो आज हिंदी के प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका निभाते दिखायी देते है। सूचना एवंम् प्रौद्योगिकी इन दिनों बहुचर्चित विषय क्षेत्र बना हुआ है। आज स्थिति ऐसी बनी है कि बिना आय.टी. के ज्ञान के हर कोई पिछड़ा हुआ सिध्द हो रहा है।

मोबाईल फोन आय.टी. का अभिन्न अंग है। जिस पर हिन्दी का प्रयोग सुलभ हुआ है। मेलजोल और वेबदुनिया जैसे हिंदी मेल पोर्टल ने अपनी जड़े जमा ली हैं। एम.एस. ऑफिस नामक सुप्रसिध्द पैकेज का हिन्दी रुपातंर माइक्रोसॉफ्ट ने बाजार में उतारा है। देवनागरी लिपि को संगणक के अनुकूल पाया जाना भी एक अहम् बात है। जैसे–'' संगणक, इंटरनेट, ई–मेल, और फैक्स आदि, उनमें अग्रेंजी के साथ स्पर्धा करने में हिंदी को पीछे नहीं हटना होगा। अब हिन्दी में सॉफ्टवेयर बन रहे हैं। इंटरनेट पोर्टल बन रहे है, और वेबसाइट का निर्माण किया जा रहा है। [4]

वैश्वीकरण की अवधारणा अभी अपना पूरा जलवा भी नहीं दिखा पाई कि संचार साधनों में अपूर्व क्रांति नजर आ रही है। पूँजीवाद और उपभोक्तावाद के जन्मदाता वैश्वीकरण, भूमडंलीकरण ने आज पूरी स्थिति को ही उलट–पुलट कर रख दिया है। ई–कॉमर्स, इंटरनेट की दुनिया का एक नया और बेहतरीन कदम है। अब विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन शैली, मनोरंजन, साहित्य, व्यापार जैसे क्षेत्रों में इंटरनेट तथा ई–कॉमर्स को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

हिंदी माध्यम बदल रहे है। सृष्टि का नियम है परिवर्तन, बदलाव। हिंदी माध्यमों में भी नए–नए माध्यम, नए–नए साधनों के बदलाव आ रहे है। हिंदी जगत बदल रहा है। साहित्य, संस्कृति में बदलाव होते हुये दिखाई दे रहे है। इलेक्ट्रानिक और लिखित माध्यम समाज परिवर्तन का एक प्रमुख अंग माना जाता है।''इलेक्ट्रानिक माध्यम किसी क्रिया को उत्प्रेरित करने के लिए एक उत्तरोत्तर अनुक्रम में प्रक्षेपित छायाचित्रों की एक लंबी श्रृखंला द्वारा विचारों के सम्प्रेषण का एक माध्यम है।'' [5]

यह युग मीडीया का युग है। समस्त संचार में सम्प्रेषण तथा माध्यमों के कारण विस्मयकारी परिवर्तन आ रहे है। परम्परागत माध्यमों में नई प्रौद्योगिकियों के कारण अद्भूत तब्दीलियॉ दिखायी देती है। मीडिया के कारण पहले की तुलना में आज समाज के अंदर कही भी, तथा किसी भी प्रकार की घटना छुपीं नहीं रहती। उसे मीडिया जनता के समक्ष लाकर ही दम लेती है। मीडिया के कारण समाज में भी चेतना में वृध्दि होती दिखाई देती है। मीडिया राजनीतिक बदलाव और सामाजिक बदलाव, धार्मिक स्वरुप को भी उजागर कर देती है। व्यापारियों के विज्ञापनों तक हमारे घर –ऑगन में ही नहीं तो अपितु हमारे मन–मस्तिष्क में पहुच चुका है। दस्तक देता हुआ दिखाई देता है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार में समूह माध्यमों का योगदान सराहनीय है। अंग्रेजी सदियों से प्रभावशाली आधुनिक भाषा प्रमाणित हो चुकि थी। आज इटंरनेट,ई–मेल जैसी सुविधाएँ हिन्दी जैसी देशीय भाषाओं में भी उपलब्ध है,जो एक सशक्त माध्यम के बतौर जनसंपर्क से हिन्दी भाषा एक अलग ही वैज्ञानिक मोड़ ले रही है। यदि बदलते राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक तथा राष्ट्रीय, आंतरर्राष्ट्रीय परिवेश को ध्यान में रखकर यदि राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयास किए जाए तो निश्चित ही राजभाषा हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल होगा।

जनसंचार माध्यम और उसके अनुकूल हिन्दी

आज हिन्दी में कई तरह के सूचना–संपन्न साप्टवेयर गन गये है। हिन्दी भाषा के विकास की दृष्टि से यदि देखा जाय तो निश्चित ही फिल्मों की महत्ता इसलिए दृष्टव्य रही है कि फिल्मों में समाज के हर स्तर का जीता जागता साक्षात्कार हमें हो जाता है। एक विद्वान के अनुसार–'' मानव समुदाय के सभी मिले–जुले वर्गों तक बड़े पैमाने पर चाहे वह निकटवर्ती हो अथवा दूरस्थ–कुछ भाव, विचार या सूचनाएँ या अन्य प्रतीकों द्वारा सम्प्रेषित किए जाते हैं, और फिर इस समय काम के लिए इलेक्ट्रानिक उपकरणों का भी उपयोग किया जाते हैं, तो कहा जाएगा कि 'जनसंचार' की प्रक्रिया काम कर रही है।'' [6] अतः स्पष्ट है कि इन माध्यमों की हिंदी अग्रेजी की ओर बढ़ रही है। साहित्यिक कृतियों में एक विशेष प्रकार की संवेदना होती है जबकि मीडिया लेखन की संवेदना साहित्य कृतियों की संवेदना अलग है।

अगर हम साहित्य की बात करे तो हम देखते है कि साहित्य मीडिया से और मीडिया साहित्य एक दूसरे से जबरदस्त प्रभावित रहे है। सुरेन्द्र वर्मा का 'मुझे चॉद चाहिए' जिसमें मिडिया को ध्यान में रखते हुए लिखा जाने लगा। सर्जनात्मकता के कारण ही साहित्य संवेदना को जन्म देता है। उदन्त मार्तण्ड की भाषा के सन्दर्भ में डॉ. अशोक कुमार शर्मा के विचार विशेष उल्लेखनीय है–''यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि 'उदन्त मार्तण्ड' हिन्दी का पहला समाचार पत्र था। हालाकि पण्डित जुगलकिशोर शुक्ल ने कहीं –कहीं व्याकरण की भूलें की हैं। जैसे तोपें दगियॉ जैसे प्रयोग।''[7]

जिस धरा पर हम हैं उसका अवलोकन करें तो निश्चित ही हम इस निर्णय पर आ पहुचते है कि इस धरा पर विकासवादी परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन हो रहा है। ''प्रौद्योगिकी के विकास के साथ–साथ भारतीय समाचार–पत्रों और पत्रिकाओं में नई–नई तकनीकों का प्रचलन हुआ है। समाचार–पत्र की छवि को नया रूप देने के लिए साज–सज्जा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। नई–नई मशीनों और विभिन्न प्रकार की मुद्रण की प्रक्रियाओं द्वारा पत्रिकाओं को द्रतगति से छापने की व्यवस्था के साथ–साथ उनकी विषय वस्तु में भी पर्याप्त सुधार हुआ है। आज का समाचार–पत्र महज एक खबरनामा ही नहीं है वह ज्ञान की विभिन्न विधाओं पर सामायिक लेख प्रकाशित कर पाठक को शिक्षित करता है। लगभग सभी अखबार रविवारिय परिशिष्ट छापकर विभिन्न अभिरूचियों की सामग्री जुटाते हैं। अब विज्ञान, खेल, कृषि, साहित्य, कानून,चिकित्सा तथा अन्य विधाओं के लिए अलग संवाददाता होते हैं जो कि अपने विषय में विशिष्ट ज्ञान रखते हैं। आधुनिक यांत्रिकी द्वारा अखबारों के प्रकाशन तकनीक में क्रांति आ गई है। कम्प्यूटर द्वारा टाइप सेट करके बहुरंगी चित्रों के साथ छपाई द्वारा अखबारों का रंग–रूप बदला है। अब उपग्रह के माध्यम से एक पत्र के कई संस्करण विभिन्न नगरों से एक ही साथ प्रकाशित किए जा सकते हैं।इलैक्ट्रानिक विधियों द्वारा विज्युल डिस्पले टर्मीनल पर संपादन, प्रूफवाचन और पृष्ठ–निर्माण का कार्य एक ही व्यक्ति द्वारा संपन्न किया जा सकते है।'' [8]

देश–विदेश में प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं ने हिन्दी को विश्वभाषा बनाया। इनकी प्रमुख भूमिका रही है हिन्दी साहित्य की धरोवर को विश्व में प्रचार–प्रसार में। हिन्दी के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ''भारत के आकाशवाणी और दूरदर्शन के अतिरिक्त विश्व के अनेक देशों के टीवी चैनलों से हिन्दी के कार्यक्रमों के प्रसारणों ने भी हिन्दी को विश्वभाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।''[9]

इससे हिन्दी के वर्तमान स्थिति तथा उसके स्थान के बारे में जानकारी मिल जाती है। हिन्दी के प्रसार–प्रचार में मीडिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सिनेमा,दूरदर्शन,पत्र–पत्रिकाएँ, आकाशवाणी,इटंरनेट,ई–मेल,द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। रंगभूमि, गोदान,मैला ऑचल, रागदरबारी, निर्मला, कब तक पुकारू तथा तमस जैसे श्रेष्ठ कुतियों को दूरदर्शन के माध्यम से जनता तक पहुचने में आसानी हुई।

पत्रकारिता की बात करे तो निश्चित ही पत्रकारिता हमारे जीवन का अभिन्न अंग रहा है। पत्रकारिता की महत्ता का अनुमान लगाना हो तो समर्थ साहित्यकार एडीसन की निम्न लिखित उक्ति से लगाया जा सकता है।–''मेरी पत्रकार होने की चिर–इच्छा पूर्ण होने से रह गई। पत्रकार–कला से अधिक मनोरंजक, अधिक विमोहक,अधिक रमसई तथा अधिक सर्वतोमुखी कोई दूसरी बात मुझे नहीं दिखाई देती। एक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन सहस्त्रों नर–नारियों तक पहुॅचना, उनसे अपने मन की बात कहना, उन्हें सलाह देना, वे क्या करें इस सम्बन्ध में परामर्श देना, उनका शिक्षण और मनोरंजन करना तथा आवश्यक हो तो उन्हें चिढ़ा भी देना– कैसा आश्चर्यजनक होता होगा, यह सोचकर ही मैं स्पंदित हो उठता हूॅ।''[10]

आज हम स्पष्ट कह सकते है कि हिन्दी भाषा विज्ञापन की अनिवार्यता बन चुकि है। अगर हम ऐसा कहे कि हिन्दी नहीं तो विज्ञापन नहीं तो इसमें अतिश्योक्ति नहीं होगी।

निष्कर्ष

जनसंचार के माध्यमों में भी काफी वृध्दि हुई है। आज नई–नई आधुनिक तंत्रविज्ञान तथा नए–नए जनसंचार माध्यम जैसे– इटंरनेट,ई–मेल, मोबाईल द्वारा यह क्षेत्र और अधिक उपयोगी सिदध हो रहा है। इंटरनेट के माध्यम से कम–से–कम समय में समाचार विश्व स्तरिय रूप धारण कर लेते है। आज के इस वर्तमान युग में केवल पत्र–पत्रिकाए ही नहीं तो बल्कि वेब मीडिया द्वारा हिन्दी का प्रसार–प्रचार जोरों–शोरों से होता हुआ दिखाई दे रहा है। समय की भी उपयोगीता सिदध हो रही है। प्रिन्ट तथा इलेक्ट्रानिक इन दोनों माध्यमों ने हिन्दी को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई है। मीडिया और हिन्दी दोनों का समान रूप दृष्टिगोचर होता है। अर्थात आज के इस आधुनिक युग में जहॉ भौतिकवाद,बाजारवाद,भूमण्डलीकरण,तथा वैश्विकरण का दौर चल रहा है,ऐसे युग में मीडिया की जिम्मेदारी भाषा के हित में तथा उसके विकास में अधिक स्वरुप में निश्चित ही बढ़ जाती है। मीडिया में गागर में सागर भरने की क्षमता, तीव्र भाषा प्रवाह, प्रभावोत्पादकता, श्रृगांरिकता आदि विशेषताएँ प्रमुखता से दिखाई देती है। हिन्दी तथा मीडिया दोनों समाज सापेक्ष है, अर्थात आज के इस वर्तमान युग में मीडिया को गागर में सागर ही नहीं तो बल्कि बिंदु में सिंदु भरना होता है।

संदर्भ ग्रंथ

1.डॉ. राजकुमारी गडकर, इलेक्ट्रानिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यम,अन्नपूर्णा प्रकाशन,127/1100 डब्ल्यू वन,साकेत नगर,कानपुर,संस्करण–प्रथम, 2014 पृ–19

2.वही – पृ–30
3.डॉ. पंडित बन्ने, मीडिया और हिंदी, अमन प्रकाशन, 104 / 118, रामबाग,कानपुर–12,संस्करण– प्रथम, 2011, पृ– 90
4.डॉ. अर्जुन चव्हान, मीडिया कालीन हिन्दी स्वरूप एवं संभावनाएँ, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी–17, जगतपुरी,दिल्ली–110051,संस्करण–प्रथम, 2005, पृ–53
5.डॉ. राजकुमारी गडकर, इलेक्ट्रानिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यम,अन्नपूर्णा प्रकाशन,127 / 1100 डब्ल्यू वन,साकेत नगर,कानपुर,संस्करण–प्रथम, 2014 पृ–28
6.डॉ. रेशमा नदाफ,जनसंचार एवं पत्रकारिता, संजय प्रकाशन,4378 / 4 बी.209,जे.एम.डी.हाऊस,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली–110002,संस्करण– प्रथम, 2010, पृ–11
7.डॉ.आर. जयचन्द्रन, हिन्दी विज्ञापन : परख और पहचान, अभय प्रकाशन,6ए / 540,आवासविकास, हंसपुरम,कानपुर,संस्करण–प्रथम, 2012, पृ–33
8.डॉ. ठाकुरदत्त शर्मा'आलोक', हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, वाणी प्रकाशन,4695,21–ए, दरियागंज,नयी दिल्ली 110002, संस्करण–2013, पृ– 42
9.डॉ. गार्गीशरण मिश्र'मराल',गरीब जनता के अमीर सेवक, विकास प्रकाशन,311,सी–विश्व बैंक बर्रा,कानपुर–208027, संस्करण– प्रथम, 2014, पृ– 23
10.डॉ. रेशमा नदाफ,जनसंचार एवं पत्रकारिता, संजय प्रकाशन,4378 / 4 बी.209,जे.एम.डी.हाऊस,अंसारी रोड,दरियागंज,नई दिल्ली–110002,संस्करण– प्रथम, 2010, पृ– 45

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org